2-4-02

स्व, सेवा साथी और विश्व-परिवर्तन के लिए अपने शक्ति स्वरूप को इमर्ज करो

आज बापदादा के पास दादियों का और सर्व आई हुई निमित्त बनी हुई टीचर्स का याद-प्यार लेते हुए वतन में पहुँची। तो सामने से ही मधुर मिलन हुआ लेकिन आज का मिलन बहुत न्यारा और प्यारा था। क्या देखा, बापदादा अपने सर्वशक्तिवान रूप में खड़े हैं। बाबा के गले में एक बहुत सुन्दर माला चमक रही थी जो भिन्न-भिन्न रंग के [illegible] रत्न थे। उन हर रत्न के बीच में एक-एक बहन का चित्र बहुत सुन्दर था। मैं दूर से ही देखते आगे बढ़ती गई। बाबा बोले बच्ची, आज मेरे निमित्त सर्विसएबुल बच्चों की याद लाई हो? बापदादा तो अपने सेवा के साथियों को सदा अपने दिल में रखते हैं।

उसके बाद बाबा को हमने समाचार सुनाया, बापदादा मुस्कराते, सब बच्चों को दृष्टि देते हुए बोले, बच्ची जानती हो - बाप बच्चों से क्या चाहते हैं? अब तो बाप हर बच्चे को विश्व की स्टेज पर अपने विशाल सर्व शक्ति रूप में प्रत्यक्ष देखने चाहते हैं क्योंकि शक्ति रूप द्वारा ही शिव बाप प्रत्यक्ष होना है। ब्रह्माकुमार कुमारी स्वरूप तो नेचरल है ही लेकिन अब विशेष शक्ति रूप इमर्ज चाहिए, जिससे ही स्व परिवर्तन निरन्तर नेचुरल होगा और उस स्व परिवर्तन से ही सेवा साथी और विश्व की आत्माओं का परिवर्तन होगा।

बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे नॉलेजफुल तो बहुत अच्छे बने हैं लेकिन नॉलेज की हर प्वाइंट को (जैसे बीती सो बीती, बिन्दी लगाना, शुभ भावना, शुभ चिंतक बनना आदि-आदि) इन हर प्वाइंट्स को पावर के रूप से यूज़ करने में कमी है क्योंकि नियम है कि हर प्रकार की पावर कोई-न-कोई

परिवर्तन अवश्य करती है। यह तो परमात्म पावर है, इससे क्या नहीं हो सकता। इसलिए खुद भी सोचते हैं जितना जैसा परिवर्तन होना चाहिए वैसे परिवर्तन नहीं है लेकिन अब समय अनुसार इस ग्रुप को सर्व के आगे सदा शुद्ध संकल्प में परिपक्वता, सत्यता, सम्पूर्ण स्वच्छता, सम्पन्नता का प्रमाण स्वरूप प्रत्यक्ष रूप में दिखाना आवश्यक है। क्योंकि यह ग्रुप कोटों में कोई आत्मायें निमित्त हैं। अब समय और स्वयं के परिवर्तन में तीव्रगति लाना अति आवश्यक है। हर श्रेष्ठ संकल्प में स्वयं में निश्चयबुद्धि बन निश्चित विजयी बनना ही है। होना ही है और हुआ ही पड़ा है। यह अनुभव स्वयं द्वारा सर्व को कराओ। साथ-साथ बाबा बोले अब विशेष आत्मायें क्या-क्या सहयोग बेहद सेवा में दे सकती हैं, जो सब समझें कि यह हमारे हैं, उस बेहद सेवा का कोई प्लैन बनाओ क्योंकि आप सब बेहद के हो। ऐसे महावाक्य उच्चारते बाबा ने सर्व को बहुत मीठी दृष्टि से याद-प्यार दिया। दादियों को विशेष याद दी और मैं साकार वतन में आ गई।